

अंतरराष्ट्रीय बाघ दविस 2023: भारतीय बाघ संरक्षण

प्रलिम्स के लिये:

अंतरराष्ट्रीय बाघ दविस, [प्रोजेक्ट टाइगर, 1973](#), [राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण](#), [बाघ अभयारण्य](#)

मेन्स के लिये:

बाघ संरक्षण का महत्त्व, संबंधित पहल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [अंतरराष्ट्रीय बाघ दविस, 2023](#) पर प्रकाशित दो महत्त्वपूर्ण रिपोर्टों ने भारत में [बाघ संरक्षण](#) की स्थिति और इसके समक्ष आने वाली चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

- [भारतीय वन्यजीव संस्थान](#) और [राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण](#) द्वारा प्रकाशित [भारतीय बाघ अभयारण्य](#) के प्रबंधन प्रभावशीलता मूल्यांकन (Management Effectiveness Evaluation- MEE), 2022 (पाँचवें चक्र) रिपोर्ट में भारतीय बाघ अभयारण्यों की प्रगति और चुनौतियों की संयुक्त तस्वीरें सामने आई हैं।
- दूसरी ओर, [चीनी वजिज्ञान अकादमी](#) और [जंगली बलिलियों के संरक्षण](#) के लिये समर्पित एक वैश्विक संगठन [पैथेरा](#) के एक अध्ययन से [बांग्लादेश](#) में बाघों की तस्करी और अवैध शिकार की गंभीर समस्या का पता चला है।
- भारत में [जंगली बाघों की संख्या वर्ष 2006 में मात्र 1,400 थी, जो वर्ष 2022 में बढ़कर 3,167 हो गई है](#), इस संख्या को बनाए रखने के लिये देश की वन क्षमता के बारे में चर्चा शुरू हो गई है।

अंतरराष्ट्रीय बाघ दविस 2023

- प्रत्येक वर्ष 29 जुलाई को धारीदार बलिली के संरक्षण को बढ़ावा देने के साथ-साथ उसके प्राकृतिक आवासों की रक्षा के लिये वैश्विक प्रणाली का समर्थन करने हेतु [अंतरराष्ट्रीय बाघ दविस \(ITD\)](#) के रूप में मनाया जाता है।
- ITD की स्थापना [वर्ष 2010 में रूस में आयोजित सेंट पीटर्सबर्ग टाइगर समिटि](#) में जंगली बाघों की संख्या में गिरावट के बारे में जागरूकता बढ़ाने, उन्हें विलुप्त होने से बचाने और बाघ संरक्षण के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिये की गई थी।

बाघ

रॉयल बंगाल टाइगर (Panthera Tigris) भारत का राष्ट्रीय पशु है।

बाघ की उप प्रजातियाँ

- * महाद्वीपीय (पैंथेरा टाइग्रिस टाइग्रिस)
- * सुंडा (पैंथेरा टाइग्रिस सोंडाइका)

प्राकृतिक अधिवास

उष्णकटिबंधीय वर्षावन,
सदाबहार वन,
समशीतोष्ण वन, मैंग्रोव
दलदल, घास के
मैदान और सवाना



देश जहाँ बाघ पाए जाते हैं

- 13 बाघ रेंज देश जहाँ यह प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं उनमें- भारत, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्याँमार, रूस, चीन, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम शामिल हैं।
- IUCN की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम में बाघ विलुप्त हो गए हैं।

संरक्षण की स्थिति

- IUCN रेड लिस्ट: लुप्तप्राय
- CITES: परिशिष्ट-I
- WPA 1972: अनुसूची-I

संरक्षण संबंधी प्रयास

- इंटरनेशनल बिग कैट्स एलायंस (IBCA): बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, चीता, जैगुआर और प्यूमा नामक सात बड़ी बिल्लियों के संरक्षण के लिये (भारत द्वारा शुरू)
- Tx2 अभियान: WWF द्वारा आरंभ किया गया; 2022 तक बाघों की आबादी को दोगुना करने के लक्ष्य को इंगित करते हुए 'टाइगर टाइम्स 2' को संदर्भित करता था
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA): WPA, 1972 के तहत गठित
- प्रोजेक्ट टाइगर : 1973 में लॉन्च किया गया
- बाघों की गणना : प्रत्येक 5 वर्ष में

खतरे

- आवास विखंडन
- अवैध शिकार
- मानव-वन्यजीव संघर्ष

भारत में बाघ

- भारत में इनकी संख्या सबसे अधिक है
 - वर्ष 2022 तक, भारत में बाघों की संख्या 3167 थी
 - मध्य भारतीय उच्च भूमि और पूर्वी घाट में इनकी सबसे बड़ी आबादी पाई गई है
- टाइगर रिजर्व: भारत में अब 53 टाइगर रिजर्व हैं
 - नवीनतम टाइगर रिजर्व उत्तर प्रदेश का रानीपुर है
 - नागार्जुन सागर (आंध्र प्रदेश) सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है जबकि ओरंग (असम) सबसे छोटा (कोर क्षेत्र) है।

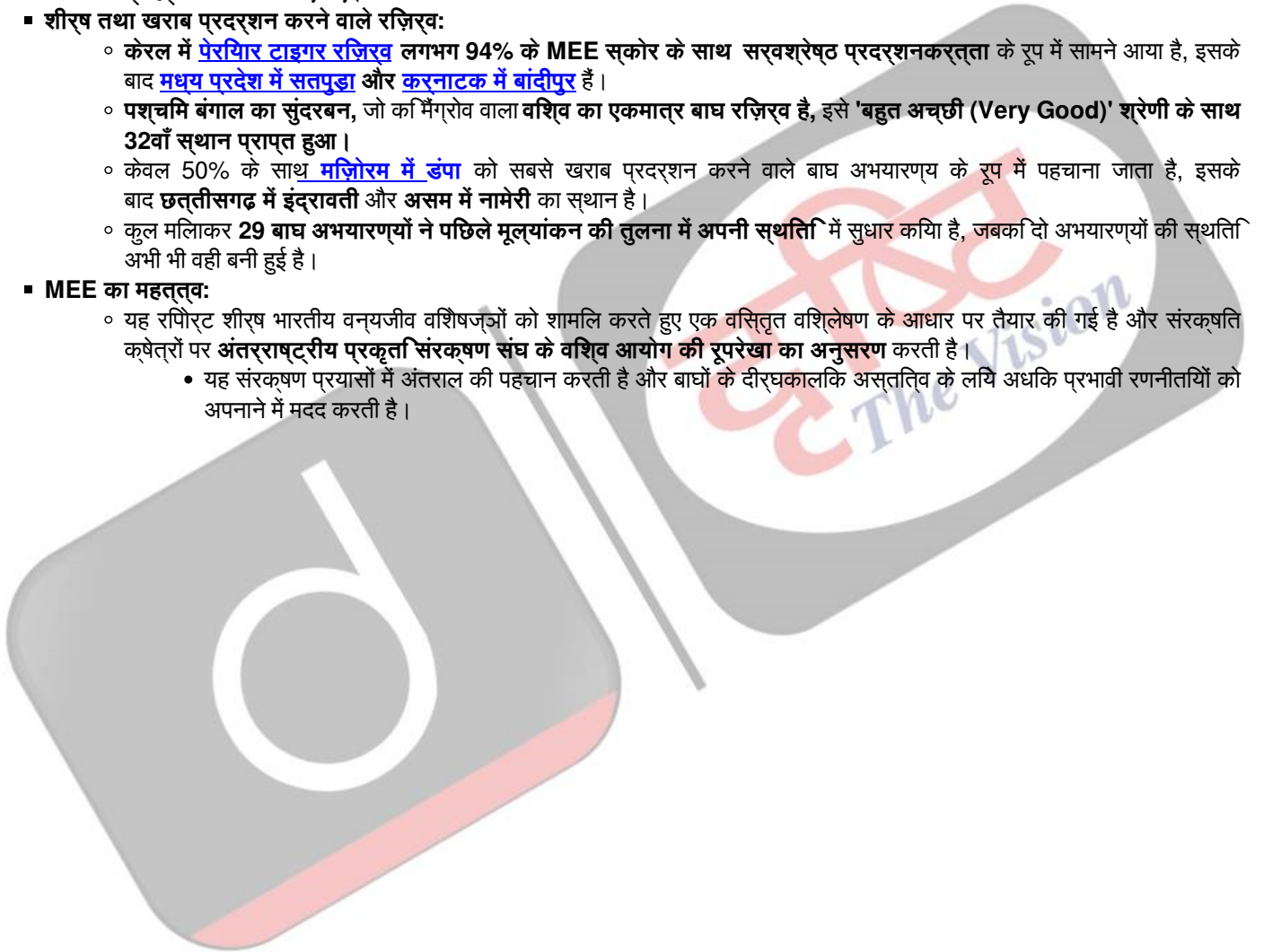


//

MEE रपिोर्ट की मुख्य वशिषताएँ:

- समग्र प्रबंधन के प्रदर्शन में सुधार:
 - इस रपिोर्ट में 33 मापदंडों का उपयोग करके 51 बाघ अभयारण्यों का मूल्यांकन किया गया है।
 - अधिकतम अंक के प्रतशित के आधार पर परणामों को चार समूहों में वभिजति किया गया था। 12 टाइगर रिजर्वों ने 'उत्कृष्ट (Excellent)' श्रेणी (स्कोर $\geq 90\%$) प्राप्त किया, 21 ने 'बहुत अच्छा (Very Good)' (75-89%) स्कोर किया, 13 ने 'अच्छा (Good)' (60-74%) स्कोर किया तथा 5 को 'नषिपक्ष (Fair)' (50-59% स्कोर) श्रेणियों के रूप में वर्गीकृत किया गया।
 - बाघ अभयारण्यों में प्रबंधन प्रदर्शन के लिये औसत स्कोर 51 बाघ अभयारण्यों के लिये 78.01% (50% से 94% के बीच) का समग्र औसत स्कोर दर्शाता है।

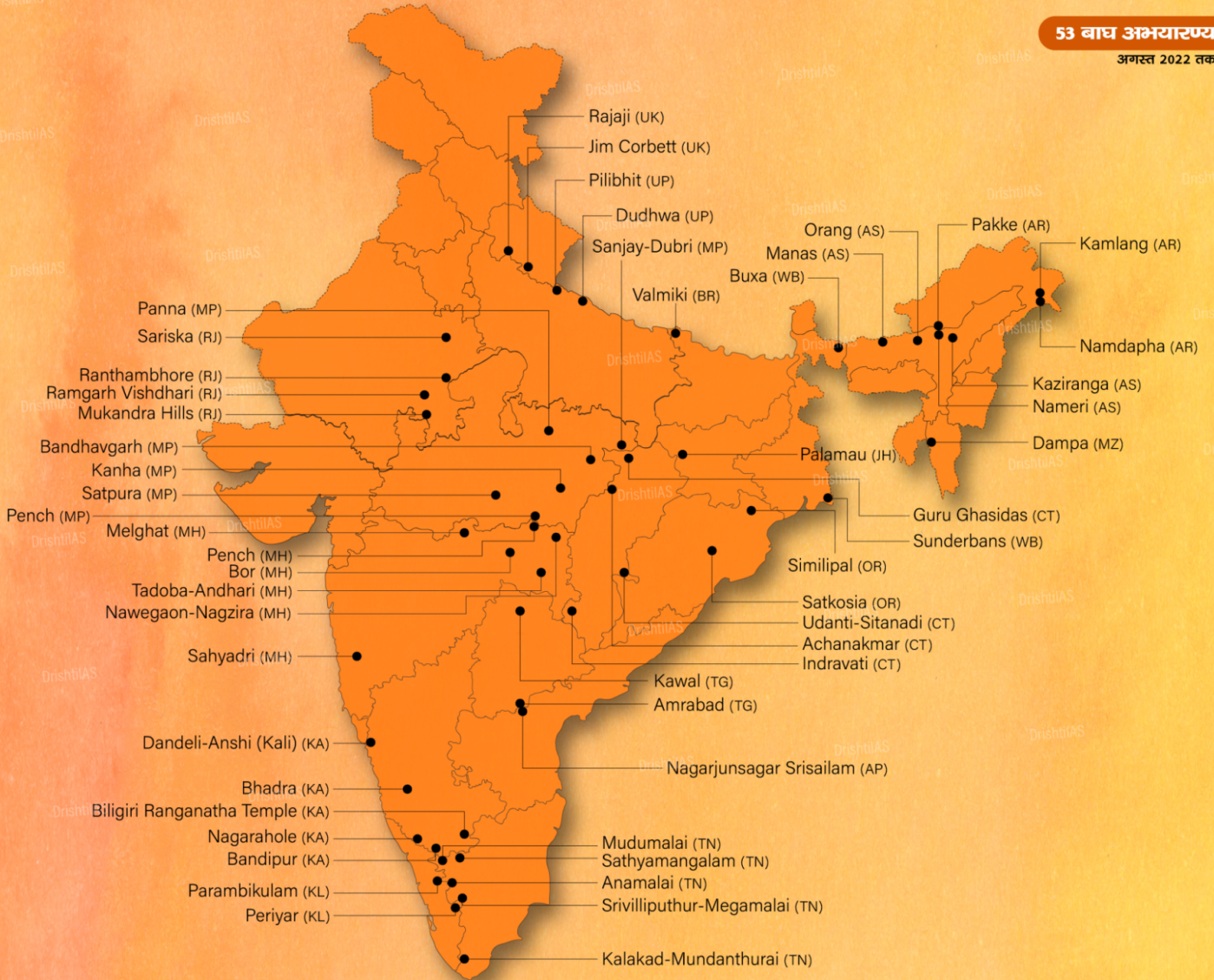
- **जलवायु कार्रवाई की सबसे कमज़ोर क्षेत्र के रूप पहचान:**
 - इस रपिर्ट में **जलवायु परिवर्तन** और **कार्बन कैपचर** प्रयासों को भारतीय बाघ अभयारण्यों के लिये **सबसे कमज़ोर प्रदर्शन करने वाले क्षेत्र** के रूप में पहचाना गया है, जसि **वर्तमान चक्र में 60% का सबसे कम स्कोर** प्राप्त हुआ है।
 - जलवायु परिवर्तन बाघ अभयारण्यों, वशिष रूप से **सुंदरबन** जैसे **उच्च तीव्रता वाले जलवायु प्रभावों** से प्रभावति क्षेत्रों, के लिये एक बड़ी चत्ता का वषिय है।
- **संरक्षण प्रयासों में नधिप्रवाह की बाधा:**
 - केंद्र एवं राज्य सरकारों के साथ-साथ अन्य दानदाताओं से **अपर्याप्त धनराशि**, बाघ रज़िर्व प्रबंधन के लिये महत्त्वपूर्ण चुनौतियिँ उत्पन्न करती है।
 - बाघ अभयारण्यों में सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले पाँच क्षेत्रों में नधिप्रवाह रैंक (Fund Flow Rank) से संबंधति तीन पैरामीटर।
 - **बाघ संरक्षण के लिये वास्तवकि फंड आवंटन (Actual Fund Allocation) वर्ष 2018-19 से कम हो गया है, वर्ष 2022-23 में इसमें वृद्धि हुई है लेकिन वास्तवकि फंड रलीज़ (Actual Fund Release) सीमति है।**
 - जटलि मांग तथा आपूर्ति प्रक्रियाओं ने नधिप्रवाह को और धीमा कर दिया है, जसिसे संरक्षण प्रयासों में वलिंब हो रहा है।
 - वत्ति की कमी **बुनयािदी ढाँचे के रखरखाव, गाँवों के पुनर्वास और मानव-वन्यजीव संघर्ष प्रबंधन को प्रभावति करती है।**
- **परदृश्य एकीकरण और मानव-वन्यजीव संघर्ष में अनुकूलता:**
 - परदृश्य एकीकरण और मानव-वन्यजीव संघर्षों का मुकाबला करने के लिये **85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले बेहतर प्रदर्शन संकेतक पाए गए।**
- **शीर्ष तथा खराब प्रदर्शन करने वाले रज़िर्व:**
 - केरल में **पेरियार टाइगर रज़िर्व** लगभग **94% के MEE स्कोर के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनकर्त्ता** के रूप में सामने आया है, इसके बाद **मध्य प्रदेश में सतपुड़ा और कर्नाटक में बांदीपुर** हैं।
 - पश्चिमि बंगाल का **सुंदरबन**, जो कि मैंग्रोव वाला वशिर्व का एकमात्र बाघ रज़िर्व है, इसे **'बहुत अच्छी (Very Good)'** श्रेणी के साथ **32वाँ स्थान प्राप्त हुआ।**
 - केवल 50% के साथ **मज़ोरम में डंपा** को सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले बाघ अभयारण्य के रूप में पहचाना जाता है, इसके बाद **छत्तीसगढ़ में इंद्रावती और असम में नामेरी** का स्थान है।
 - कुल मलिाकर **29 बाघ अभयारण्यों ने पछिले मूल्यांकन की तुलना में अपनी स्थिति में सुधार किया है, जबकि दो अभयारण्यों की स्थिति अभी भी वही बनी हुई है।**
- **MEE का महत्त्व:**
 - यह रपिर्ट शीर्ष भारतीय वन्यजीव वशिषज्जों को शामिल करते हुए एक वसित्त वशि्लेषण के आधार पर तैयार की गई है और संरक्षति क्षेत्रों पर **अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ के वशिर्व आयोग की रूपरेखा का अनुसरण** करती है।
 - यह संरक्षण प्रयासों में अंतराल की पहचान करती है और बाघों के दीर्घकालकि असत्तिव के लिये अधिक प्रभावी रणनीतियिँ को अपनाने में मदद करती है।



बाघ अभयारण्य

53 बाघ अभयारण्य

अगस्त 2022 तक



तथ्य

- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की सिफारिश पर राज्य सरकार किसी क्षेत्र को बाघ अभयारण्य/टाइगर रिज़र्व के रूप में अधिसूचित कर सकती है।
- सबसे बड़ा बाघ अभयारण्य (कोर क्षेत्र): नागार्जुनसागर श्रीशैलम (आंध्रप्रदेश)
- सबसे छोटा बाघ अभयारण्य: ओरंग (असम)
- सर्वाधिक बाघ घनत्व वाला अभयारण्य: कॉर्बेट (उत्तराखंड) (अखिल भारतीय बाघ अनुमान 2018)
- सर्वाधिक बाघ आबादी वाला राज्य: मध्य प्रदेश (अखिल भारतीय बाघ अनुमान 2018)



पैंथेरा द्वारा कथि गए अनुसंधान की मुख्य वशिषताएँ:

- पैंथेरा द्वारा कथि गए अध्ययन में बांग्लादेश को लुप्तप्राय बाघों के अवैध शिकार और तस्करी के लथि एक प्रमुख केंद्र के रूप में उजागर कथि गया है।
- इसने देश और वदिश में बांग्लादेशी अभजित वर्ग के बढते वर्ग की पहचान की जो औषधीय, आध्यात्मिक तथा सजावटी उद्देश्यों के लथि बाघ के अंगों की मांग को बढा रहा है।
- शोध से पता चला है कि बांग्लादेश से बाघ के अंगों की आपूर्तभारत, चीन और मलेशया सहति 15 देशों के साथ-साथ यूनाइटेड कगिडम, जर्मनी, ऑस्ट्रेलया तथा जापान जैसे विकसति G-20 देशों को की जा रही थी।
- बांग्लादेश में बाघों के एक महत्त्वपूर्ण नविस स्थान सुंदरबन में बाघों के अवैध शिकार में शामिल समुद्री डाकू समूहों की घुसपैठ देखी गई, जसिसे बाघों की आबादी में उल्लेखनीय गरिवट आई।

- अध्ययन में बाघों के अवैध शिकार के लिये चार स्रोत स्थलों की पहचान की गई, जिनमें भारत और बांग्लादेश में सुंदरबन, भारत में काज़ीरंगा-गरमपानी (Garampani) पार्क, म्यांमार का उत्तरी वन परिसर और भारत में नामदफा-रॉयल मानस पार्क शामिल हैं।
- बाघों की तस्करी में शामिल व्यापारियों ने लॉजस्टिक्स कंपनियों के मालिक होने और कानूनी वन्यजीव व्यापार के लिये लाइसेंस होने के कारण अवैध रूप से प्राप्त बाघ के अंगों को आसानी से छुपा दिया।
- शोध में बांग्लादेश सरकार द्वारा वशिष्ट खिलाड़ियों, व्यापार मार्गों और अवैध शिकार के मुद्दों को लक्ष्य करते हुए एक समस्या-उन्मुख दृष्टिकोण का सुझाव दिया गया

बाघ संरक्षण की भारत के वनों की क्षमता को लेकर चिंता:

- **संरक्षित क्षेत्रों के बाहर वचिरण:** बाघों की लगभग 30% आबादी संरक्षित क्षेत्रों के बाहर वचिरण करती है जिस कारण मानव बस्तियों में इनके घुस आने के मामले सामने आते रहते हैं, इससे मानव-बाघ संघर्ष होता है।
 - बाघों की बढ़ती आबादी के साथ एक सवाल यह भी है कि क्या भारत के जंगल इन शीर्ष शिकारी पशुओं को सही वातावरण प्रदान करने की क्षमता के अनुरूप हैं।
- **बाघ गलियारों का संकुचन:** रेलवे लाइनों, राजमार्गों और नहरों जैसे बुनियादी ढाँचे के निर्माण के परिणामस्वरूप बाघ गलियारे संकुचित हो रहे हैं, जो कि दो बड़े वन क्षेत्रों को जोड़ने वाला प्रमुख मार्ग है।
- **मानव-प्रधान क्षेत्रों में प्रवेश:** ऐसा माना जाता है कि बाघ शाकाहारी जीवों की तलाश में जंगलों को छोड़ तेज़ी से मानव-प्रधान क्षेत्रों की ओर बढ़ते हैं। यह व्यवहार लैंडाना जैसी आक्रामक प्रजातियों द्वारा प्राकृतिक वनस्पतियों के अधिग्रहण से प्रेरित है, जो प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करता है तथा इन्हें मनुष्यों के निवास वाले क्षेत्रों में भोजन की तलाश करने के लिये बाध्य करता है।
- **असमान जनसंख्या वितरण:** भारत में 53 बाघ अभयारण्य हैं जो 75,000 वर्ग कमी. में फैले हुए हैं, केवल 20 अभयारण्य (एक-तहिई क्षेत्र) बाघ संरक्षण के लिये हैं, यह असमान जनसंख्या वितरण को दर्शाता है।

आगे की राह:

- बाघ आवासों के बेहतर संरक्षण के लिये वन प्रबंधन प्रथाओं को सुदृढ़ किया जाना चाहिये।
- वन क्षेत्रों के बीच अप्रतिबंधित आवाजाही की सुविधा के लिये बाघ गलियारों को सुरक्षित और पुनर्स्थापित किया जाना चाहिये।
- मानव-वन्यजीव संघर्ष के प्रबंधन के लिये साक्ष्य-आधारित रणनीतियाँ लागू किये जाने की आवश्यकता है।
- इन संघर्षों को कम करने के लिये बाघ अभयारण्यों के आसपास गाँवों का पुनर्वास में तेज़ी लाना आवश्यक है।
- मानवाधिकारों और अन्य प्रजातियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संरक्षण के लिये एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिये।
- मानव-प्रधान क्षेत्रों में बाघों की गतिविधियों और सामाजिक सहिष्णुता पर शोध करना।
- आवास संबंधी समस्या के समाधान के लिये स्थायी बुनियादी ढाँचे का विकास सुनिश्चित किया जाना चाहिये।
- स्थानीय समुदाय को बाघों सहित संरक्षण परियोजनाओं का समर्थन जारी रखने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रलिस:

प्रश्न. निम्नलिखित बाघ आरक्षित क्षेत्रों में "क्रांतिक बाघ आवास (Critical Tiger Habitat)" के अंतर्गत सबसे बड़ा क्षेत्र कसिके पास है? (2020)

- कॉरबेट
- रणथंभौर
- नागार्जुनसागर-श्रीशैलम
- सुंदरबन

उत्तर: (c)

- "क्रांतिक बाघ आवास (Critical Tiger Habitat), जैसे टाइगर रजिर्व कोर क्षेत्र भी कहा जाता है, की पहचान वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम (डब्ल्यूएलपी), 1972 के अंतर्गत की गई है। वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर अनुसूचित जनजात या ऐसे अन्य वनवासियों के अधिकारों को प्रभावित किये बिना ऐसे क्षेत्रों को बाघ संरक्षण के लिये सुरक्षित रखा जाना आवश्यक है। सीटीएच की अधिसूचना राज्य सरकार द्वारा उद्देश्य के लिये गठित विशेषज्ञ समिति के परामर्श से की जाती है।
- कोर/क्रांतिक बाघ आवास क्षेत्र:
 - कॉरबेट (उत्तराखंड): 821.99 वर्ग कमी
 - रणथंभौर (राजस्थान): 1113.36 वर्ग कमी
 - सुंदरबन (पश्चिम बंगाल): 1699.62 वर्ग कमी
 - नागार्जुनसागर श्रीशैलम (आंध्र प्रदेश का हसिसा): 2595.72 वर्ग कमी

■ अतः विकल्प (c) सही है।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/international-tiger-day-2023-indian-tiger-conservation>

